सफेद मूसली की खेती

बी.एम. चौधरी, के.के. प्रसाद एवं वी.आर. सिंह

सफेद मूसली एक कंदीय फसल है जिसे कमजोरी दूर करने में उपयोग किया जाता है। यह मुख्यतया अरावली की पहाड़ियों में तथा गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश व राजस्थान के पहाड़ी इलाकों में पायी जाती है। इसका पौधा 15 से 45 सेमी. ऊँचा होता है तथा फूल सफेद रंग का होता है। इसकी खेती भारतवर्ष में करीब 40 हजार हैक्टेयर में की जा रही है। झारखण्ड राज्य में राँची जिले के किसान इसकी 50 हैक्टेयर भूमि में जैविक खेती कर रहे हैं। झारखण्ड के जंगलों में यह कहीं–कहीं पाया जाता है। इसका उपयोग विमिन्न बिमारियों के उपचार के लिए भी किया जाता है। दिल्ली के खारी–वावली के साथ–साथ इंदौर, अहमदाबाद, मुम्बई, हैदराबाद में सफेद मूसली के बड़े बिक्री केन्द्र है। समाज के विशेष वर्गों में पौष्टिक आहार तथा खाद्य पूरक के रूप में प्रयोग हो रहा है। देश के साथ विदेशों में भी इसकी मांग है।

किस्म : सफेद मूसली की कई किस्में देश में पाई जाती है। लेकिन *Chlorophytum borrivilianum* का उत्पादन अधिक होता है। यह Liliaceae कुल का पौधा है। इसका छिलका उतारना भी आसान है। इसमें पाये जाने वाले उपयोगी औषधीय तत्वों की मात्रा भी दूसरी किस्मों से अधिक होती है। इस किस्म में ऊपर से नीचे तक जड़ों या ट्यूवर्स की मोटाई प्रायः एक समान होती है। एक साथ कई ट्यूवर्स (2–50) गुच्छे के रूप में पाये जाते है जो ऊपर से डिस्क या क्राउन से जुड़े रहती है। उत्पादन एवं गुणवत्ता की दृष्टि से M.D.H.BIO 13 किस्म अच्छी है।

जलवायु : यह मूलतः गर्म तथा आर्द्र प्रदेशों का पौधा है। अतः झारखण्ड के सभी जिलों में इसकी खेती सफलता पूर्वक की जा सकती है।

भूमि : कंदीय फसल होने के कारण सही विकास के लिए भूमि को हल्का होना चाहिए परंतु उत्पादन की दृष्टि से रेतीली दोमट मिट्टी या हल्की लाल मिट्टी जड़ों के विकास के लिए उपयुक्त पाई जाती है। मिट्टी का pH 6.5-7.5 होना चाहिए। जल निकास की पूरी व्यवस्था होनी चाहिए तथा भूमि में जीवाश्म की पर्याप्त मात्रा रहनी चाहिए।

खेत की तैयारी : सफेद मूसली 8–9 महीने की फसल है जिसे जून में लगाकर जनवरी–फरवरी में खोद लिया जाता है। अच्छी खेती के लिए यह आवश्यक है कि खेतों को गर्मी में गहरी जुताई की जाय। अगर संभव हो तो हरी खाद के लिए ढैचा या सनई, सफेद मूसली लगाने के दो महीने पहले बो दें। जब पौधों में फूल आने लगे तो काटकर तथा खेत में डालकर मिला दें। गोबर की सड़ी खाद 10 टन प्रति हेक्टेयर की दर से अंतिम जुताई में मिला दें। खेतों में क्यारिया एक मीटर चौड़ी तथा एक फीट ऊँचा बनाकर 30 सेमी. की दूरी पर (कतार) एवं 15 सेमी. पर पौधे से पौधा को लगाते हैं। क्यारिया बनाने के पूर्व 3 क्वींटल प्रति हेक्टेयर की दर से नीम या करंज की खल्ली मिला दें। खेतों में केंचुआ खाद 5 क्वींटल प्रति हैक्टेयर भी देना चाहिए।

बीज, उसकी मात्रा : व्यावसायिक खेती के लिए ट्यूवर्स (Tubers) की जरूरत होती है। डिस्क या क्राउन से लगी ट्यूवर्स को डिस्क के कुछ भाग के साथ काट लिया जाता है। कई बार एक–एक ट्यूवर्स भी अलग की जाती है तथा कभी 2–3 फीगर्स साथ रखते हैं। यही डिस्क सहित कटे ट्यूवर्स ही बीज के रूप में व्यवहार किए जाते हैं। प्रायः एक ट्यूवर का वजन 10–20 ग्राम होता है और एक हैक्टेयर के लिए 10 क्विंटल ट्यूवर बीज की जरूरत पड़ती है। वर्त्तमान में इनकी दरें 300 रुपये प्रति किलो है।

बीज उपचार एवं लगाने का तरीका : जैविक विधि में गौमुत्र (1:10) में 1–2 घंटे तक डूबोकर रखा जाता है। रसायनिक विधि में बेविस्टीन या स्ट्रोप्टोसाइक्लिन का 0.1 प्रतिशत के घोल में रखते हैं। बुआई के लिए गड्ढे बना लिए जाते हैं। गड्ढे की गहराई उतनी होनी चाहिए जितनी ट्यूवर्स की लम्बाई हो। बीजों का रोपन इन गड्ढों में कर हल्की मिट्टी डालकर भर दें। अरहर की एक लाईन सफेद मूसली के तीन लाईन के बाद बोया जा सकता है जिससे मूसली के पौधों को छाया मिले और

अरहर की पत्तियाँ गिरकर एक मल्च (Mulch) का भी काम करती है।

सिंचाई एवं निकाई–गुड़ाई : रोपाई के बाद Drip या स्प्रिंकलर सिंचाई द्वारा पानी दें। बुआई के 7–10 के अन्दर यह उगना प्रारंभ हो जाता है। उगने के 75–80 दिन तक अच्छी तरह बढ़ने के बाद सितम्बर के अन्त में पत्ते पीले होकर सूखने लगते हैं तथा 100 दिन के उपरांत पत्ते गिर जाते हैं। इसी तरह से पौधों को छोड़ दिया जाता है फिर जनवरी–फरवरी में जड़ें निकाली जाती है। फसल के उगने के 20–25 दिन बाद बायोजाइम क्रॉप प्लस 1मि.ली. 1 लीटर पानी में या बायोजाइम ग्रैनुअल 20–30 किलो प्रति हैक्टेयर देने से अच्छे परिणाम मिलते हैं।

सफेद मूसली मध्य जून तक अवश्य लगाएं। नियमित वर्षा में सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती है। अनियमित मानसून में 10–12 दिन में एक सिंचाई दें। अक्टूबर के बाद 15–20 दिनों पर हल्की सिंचाई करते रहना चाहिए। नमी बनाए रखने के लिए मल्चिंग भी किया जाता है। जब तक मूसली उखाड़ न ली जाय तब तक नमी बनाए रखें।

खुदाई : जबतक मूसली का छिलका कठोर न हो जाय तथा इसका सफेद रंग बदलकर गहरा भूरा न हो तबतक जमीन से नहीं निकालें। मूसली को निकालने का समय जनवरी के अंत से फरवरी तक है। खोदने के उपरांत इसे दो कार्यों – बीज रखना या छीलकर तथा सुखाकर बेचने हेतु तैयार किया जाता है। बीज के रूप में रखने के लिए खोदने के 1–2 दिन तक कंदों को छाया में रहने दें ताकि अतिरिक्त नमी कम हो जाय, फिर कवकरोधी दवा (Bavistin) से उपचारित कर रेत के गड्ढों, कोल्ड एयर कुल्ड चैम्बर में रखें।

सुखाकर बेचने के लिए फिंगर्स को अलग–अलग कर चाकू अथवा पीलर की सहायता से छिलका उतार कर धूप में 3–4 दिन रखा जाता है। अच्छी प्रकार सूख जाने पर बैग में पैक कर बाजार में बेचते हैं। सूखे जड़का पाऊडर बनाकर एवं दूध में उबालकर या शहद के साथ मिलाकर भी लिया जाता है।

उपज : साधारणतः बीज की तुलना में गीली मूसली 6–7 गुणा प्राप्त होती है। अतः प्रति हेक्टेयर 10 क्विंटल बीज से 60–70 क्विंटल गीली मूसली प्राप्त होगी। अच्छा यह होगा कि जो लम्बी और बड़ी ट्यूवर्स है उन्हें छीलकर सुखा लिया जाय और पतली एवं छोटी ट्यूवर्स को बीज के रूप में प्रयोग किया जाय। इस प्रकार एक हैक्टेयर में 60 क्विंटल गीली मूसली में 10 क्विंटल बीज के लिए रखकर शेष 50 क्विंटल सुखा दें ताकि 80 प्रतिशत सूख कर 10 क्विंटल सूखी मूसली प्राप्त हो।

सूखी मूसली के प्रकार एवं बिक्री दर :

'अ' श्रेणी : सही प्लांटिंग मैटेरियल से अच्छी तरह उगाई गई मूसली जो लम्बी, मोटी, सफेद एवं कड़क हो उसका मूल्य 700–800 रुपये प्रति किलो तक मिलता है। **'ब' श्रेणी** : इस श्रेणी की मूसली 'अ' श्रेणी की मूसली से कम मूल्य की होती है। **'स' श्रेणी** : इस श्रेणी की मूसली काफी छोटी, पतली तथा भूरे रंग की होती है जो जंगलों से अपरिपक्व अवस्था में उखाड़ी जाती है। इसका मूल्य 100–200 रु. प्रति किलो मिलता है।

आर्थिक विश्लेषण : सफेद मूसली की खेती में प्रति हेक्टेयर खर्च 4 लाख 75 हजार रुपये आता है। इसमें मुख्यतः खेत की तैयारी, खाद, मेड़ बनाने की लागत, निकाई–गुड़ाई, बीज की लागत एवं लगाने का खर्च, उखाड़ने, छीलन तथा सुखाने का खर्च शामिल है। प्रति हेक्टेयर 10 क्वींटल सूखी मूसली 500 रुपये प्रति किलो बेचने से 5 लाख रुपये एवं 10 क्वींटल गीली मूसली 300 रुपये प्रति किलो बेचने से 3 लाख रुपये की अतिरिक्त आय, तथा कुल आय 8 लाख रुपये प्रति हैक्टेयर आती है। इस तरह से प्रति हैक्टेयर शुद्ध लाभ 3 लाख एवं 25 हजार रुपये मिलता है।

Concept & Editing. Prof. B. N. Singh, Director Research
Financial Support : NMPB

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें :

निदेशक अनुसंधान, अनुसंधान निदेशालय, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, काँके, राँची – 834006
दुरभाष–0651 – 2450610 (का0), फैक्स–0651–2451011/2450850 माबाईल–94319 58566
Email : dr_@rediffmail.com